nwda.gov.in

भूजल दोहन, कुप्रबंधन व बर्बादी से बढ़ रहा पेयजल संकट

गंभीर प्रयास की जरूरत, नहीं तो होगी विकराल समस्या

जल जागरण

संतोष कुमार सिंह • नई दिल्ली

राजधानी में पानी की समस्या बढ़ती जा रही है। यहां की बड़ी आबादी को आज भी पाइपलाइन से पेयजल उपलब्ध नहीं है। कई क्षेत्रों में नियमित पानी की आपूर्ति नहीं होती है। राजधानी में 1150 मिलियन गैलन प्रतिदिन (एमजीडी) पानी की जरूरत है, लेकिन विभिन्न स्त्रोतों से लगभग 955 एमजीडी पानी उपलब्ध हो रहा है। यानी जरूरत से लगभग 18 प्रतिशत कम। उपलब्ध पानी में से भी बड़ी मात्रा में कुप्रबंधन के कारण बर्बाद हो जाता है। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाया गया तो आने वाले वर्षों में पेयजल की समस्या विकराल हो सकती है।

आठ वर्षों में 600 एमजीडी मांग बढ़ने की संभावना: बढ़ रही आबादी और औद्योगिक गतिविधियों के कारण पानी की मांग भी बढ़ रही है। अनुमान है कि वर्ष 2031 तक यहां 1750 एमजीडी पानी की जरूरत पड़ेगी। यदि अतिरिक्त पानी की व्यवस्था नहीं की गई तो यहां की बड़ी आबादी को पानी की समस्या का सामना करना पड़ेगा।

दूसरे राज्यों पर निर्भरता: राजधानी में पानी की उपलब्धता कम होने से वह अपनी जरूरत के लिए पड़ोसी राज्य हरियाणा, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश पर निर्भर है। यही कारण है कि अक्सर पानी को लेकर पड़ोसी राज्यों विशेषकर हरियाणा के साथ दिल्ली का विवाद होता रहता है। कभी यमुना में कम पानी छोड़ने तो कभी यमुना में अमोनिया व अन्य प्रदूषक तत्वों के बढ़ने से दिल्ली में पेयजल की दिक्कत होती है।

जल संकट के मुख्य कारण

- कई क्षेत्र में नियम का उल्लंघन कर भूजल दोहन, जिससे भूजल स्तर नीचे गिर रहा है
- पाइपलाइन क्षतिग्रस्त होने से पानी की बर्बादी
- अवैध कनेक्शन व अन्य तरह से पानी की चोरी। इससे दूषित जल आपूर्ति की समस्या भी होती है
- शोधित जल का उपयोग पीने के अलावा अन्य कार्यों में करना
- अपशिष्ट जल को शोधित कर उसका दोबार उपयोग में लाने के प्रयास में कमी

मास्टर प्लान में सुधार की बात

- दिल्ली के मास्टरप्लान 2041 के मसौदा में पानी आपूर्ति की स्थिति में सुधार की बात की सिफारिश की गई है
- ताजा पानी की मांग घटाकर अपशिष्ट जल को शोधित कर फिर से उपयोग में लाना
- वर्षा के पानी की बर्बादी रोकने के लिए वर्षा जल संग्रहण को बढ़ावा देने की जरूरत
- जल वितरण प्रणाली और इसके आधारभूत ढांचे में सुधार
- अंतर राज्यीय समझौते के माध्यम से जरूरत के अनुसार अशोधित पानी प्राप्त करना
- प्रति व्यक्ति पानी की खपत को कम करना

वर्षा जल संरक्षण में नजीर बनीं वसंत कुंज की पांच सोसायटियां

जासं, दक्षिणी दिल्ली: दक्षिणी जिले की वसंत कुंज की पांच सोसायटियां जल संरक्षण की मिसाल बन रही हैं। पांचों सोसायटियों की आबादी महज 2200 है। उसके बावजूद इनकी तरफ से जल संरक्षण की दिशा में काफी कार्य किए गए हैं। इसके तहत सोसायटी के हर घर में टेप कनेक्शन लगाए गए हैं, जिससे जल व्यर्थ नहीं बहता है। इसके साथ ही आरडब्ल्यूए ने अपने खर्चे पर भूजल रिचार्ज बोर लगवाए हैं। इससे बरसात का पानी संरक्षित किया जाता है। साथ ही सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाया गया है, जिससे शुद्ध होकर निकलने वाले पानी का पार्कों में इस्तेमाल किया जाता है।

वसंत कुंज गंगा सोसायटी के आरडब्ल्यूए अध्यक्ष नरेंद्र सिंह मोर ने बताया कि वर्ष 2010 में यहां की सोसायटियां स्थापित की गई थीं। तभी से यहां जल संचयन और वर्षा जल संचयन रिचार्ज पिट तैयार किया था। इसके तहत प्रत्येक सोसायटी में आठ/15 फुट गड्ढा खोदकर पिट का रूप दे दिया। इस पिट के तीन हिस्से कर दिए गए। टैंक के एक हिस्से में गंदा पानी गिरता है और दूसरे हिस्से में फिल्टर लगा है और अगले हिस्से में बोर हैं। इसमें फिल्ट डाला है।

वर्षा जल के संचयन के लिए और अधिक सचेत हों हम

शिवांगी चंद्रवंशी • नई दिल्ली

राजधानी में गिरते भू जलस्तर को सुधारने के लिए बूंद-बूंद पानी बचाना जरूरी है। नई दिल्ली व दक्षिणी दिल्ली की कुछ सोसायटियों में ऐसा हो भी रहा है जहां जल संचयन के प्रबंध किए गए हैं। इनमें वसंत कुंज की गंगा, यमुना, नर्मदा, सरस्वती और कावेरी सोसायटी और साकेत के जी ब्लाक, के, एन और एकता अपार्टमेंट में जल संचयन और वर्षा जल संचयन के लिए पिट लगाई गई हैं। इसके अलावा सोसायटी में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) की भी व्यवस्था की गई है। हालांकि, कई सोसायटियों में तैयारियां आधी-अधूरी हैं। इसे दुरुस्त करने की आवश्यकता है। साकेत इलाके में कहीं एसटीपी प्लांट नहीं हैं। एक है तो वह भी खराब पड़ा है।

वसंत कुंज की पांच सोसायटियों में कुल 2,200 घर हैं, जिनमें से निकलने वाला पानी जल संचयन के लिए जाता है। इसे दोबारा इस्तेमाल में लाया जाता है। उनकी सोसायटी में पानी बर्बाद नहीं होता। वर्षा जल संचयन के लिए सोसायटी के अंदर स्ट्राम वाटर प्लांट लगाए गए हैं।

वसंत कुंज की गंगा सोसायटी : वसंत कुंज की गंगा सोसायटी में 476 घर हैं। सोसायटी में वर्षा जल और जल संचयन के लिए पिट लगाई गई हैं। सोसायटी के आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह मोर बताते हैं कि उनके यहां वर्षा जल से लेकर घरों से निकलने वाले पानी का संचयन कर दोबारा सोसायटी के लोगों के इस्तेमाल में आता है। सोसायटी में एक एसटीपी प्लांट भी लगा है। इसमें सोसायटी की सीवरेज का दूषित पानी को शुद्ध करके पार्कों में इस्तेमाल किया जाता है।

वसंत कुंज की यमुना सोसायटी : यमुना सोसायटी में भी कुल 476 घर हैं। सोसायटी में जल संचयन और वर्षा जल संचयन के लिए अलग-अलग पिट बनाई गई हैं। पार्क में एक एसटीपी भी लगाया गया है।

वसंत कुंज की सरस्वती सोसायटी : कुल घर 476। सोसायटी में जल संचयन और वर्षा जल संचयन के लिए अलग-अलग पिट बनाई गई हैं। पार्क में एक एसटीपी भी लगाया गया है।

वसंत कुंज की कावेरी सोसायटी : कुल घर 1000 है। सोसायटी में जल संचयन और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था की गई है।

लुटियंस दिल्ली की सोसायटी में हैं जल संरक्षण के इंतजाम: लुटियंस दिल्ली की सोसायटी में वर्षा जल संचयन के इंतजाम हैं। सांसदों के रहने के लिए कुछ वर्ष पहले बीडी मार्ग पर गंगा व नर्मदा जैसी बहुमंजिला इमारतें हैं, जिसमें वर्षा जल संचयन के साथ एसटीपी भी लगा हुआ है।

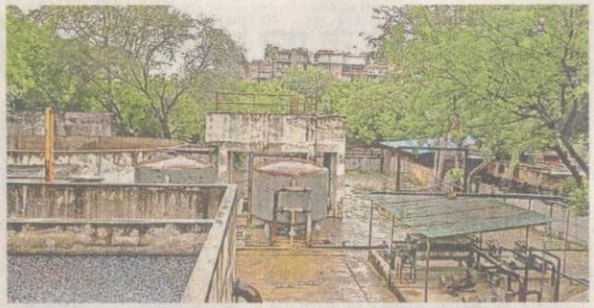

वसंत कुंज की गंगा सोसाइटी में लगाया गया वाटर ट्रीटमेंट प्लांट • जागरण

वसंत कुंज की नर्मदा सोसायटी

नर्मदा सोसायटी में भी कुल 476 घर हैं। यहां घरों से निकलने वाले पानी की निकासी के लिए कोई बाहरी नाला नहीं है। सोसायटी के आरडब्ल्यूए के सदस्यों ने बताया कि सोसायटी में जल संचयन और वर्षा जल संचयन के लिए अलग-अलग पिट बनाई गई हैं। पार्क में एक एसटीपी भी लगाई गई है। समय-समय पर इसकी कार्यप्रणाली को चेक किया जाता है।

साकेत का के ब्लाक

के ब्लाक पार्क में केवल वर्षा जल संचयन के लिए व्यवस्था की गई है। इसके अलावा एसटीपी और जल संचयन की कोई व्यवस्था नहीं है।

साकेत का एन ब्लाक

केवल वर्षा जल संचयन के लिए व्यवस्था की गई है। इसके अलावा एसटीपी और जल संचयन की कोई व्यवस्था नहीं है।

साकेत का जी ब्लाक

फेडरेशन आफ आरडब्ल्यूए साकेत के अध्यक्ष राकेश डबास ने बताया कि साकेत में अब जो नई सोसायटी स्थापित की जा रही हैं उनमें जल संरक्षण का ध्यान दिया जा रहा है। पूर्व में बनी सोसायटी में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। यहां के जी ब्लाक के पार्क में वर्षा जल संचयन के लिए पिट बनाई गई है, वहीं एसटीपी की कोई व्यवस्था नहीं है।

एकता अपार्टमेंट

एकता अपार्टमेंट के आरडब्ल्यूए अध्यक्ष जीएल वर्मा ने बताया कि पिछले साल तक जरा सी वर्षा होने पर अपार्टमेंट में पानी भर जाता था। काफी शिकायतों के बाद हमनें स्वयं यहां रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए पिट बनवाई। अब वर्षा का पानी हम बचाते हैं और उसका इस्तेमाल रोजमर्रा के काम के लिए कर लेते हैं, यहां एसटीपी नहीं लगा है। सैदुलाजाब में एसटीपी लगाया गया है, वह भी काम नहीं कर रहा है।